ताल प्रकरण

प्रत्येक संगीतज्ञ गायन, वादन अथवा नृत्य करते समय सर्वप्रथम एक लय निश्चित करता है। जिसमें वह अपनी कलात्मक साधना का परिचय देता है। हमारा संगीत 'देशी संगीत' है, जो जनरुचि के अनुसार बदलता रहता है। कुछ समय पूर्व जब 'ध्रुपद' गायन का प्रचार था, उस समय पखावज पर चारताल, तीव्रा, सूलताल आदि ताल बजते थे। कुछ समय के बाद ख्याल गायन, टप्पा, ठुमरी आदि का प्रचलन शुरू होने पर तबले का अस्तित्त्व आया। तब तीनताल, एकताल, दादरा, कहरवा, अद्धा, रूपक आदि तालों का जन्म हुआ। जिस पर आज भजन, ग़ज़ल, छोटा ख्याल, टप्पा, ठुमरी जैसे गायन के नये प्रकारों का प्रचार एवं प्रसार हुआ। नीचे कुछ ताल दिए गये हैं, जिनके सहारे सुगम, शास्त्रीय एवं फिल्मी गायन होते है-

तीनताल-एक परिचय

तीनताल को त्रिताल भी कहा जाता है। इसमें चार-चार मात्राओं के चार विभाग होते हैं। इसके पहली, पाँचवी एवं तेरहवीं मात्रा पर ताली एवं नवीं मात्रा पर खाली होता है। मध्यलय में ज्यादातर इसका प्रयोग होता है।

मात्रा	1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
बोल	धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	धा धिं धिं धा
ताल	x	2	0	3

एकताल

एकताल बारह मात्रा का ताल है। इसमें दो-दो मात्राओं के छः विभाग होते हैं। इसके 1, 5, 9 एवं 11 वीं मात्रे पर ताली है। इसके 3 एवं 7 वीं मात्रे पर खाली है।

मात्रा	1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12
बोल	धिं धिं	धागे तिरकिट	तू ना	क ता	धागे तिरकिट	धी ना
ताल	x	0	2	0	3	4

ताल-कहरवा

कहरवा आठ मात्रा का ताल है। इसमें चार-चार मात्राओं के दो विभाग होते हैं। इसके पहली मात्रा पर ताली तथा पाँचवी मात्रा पर खाली है। इसका भी सुगम संगीत में प्रयोग होता है।

मात्रा	1 2 3 4	5 6 7 8
बोल	धा गे न ति	न क धि न
ताल	x	0

दादरा

दादरा 6 मात्रा का ताल है। इसमें तीन-तीन मात्रे के दो विभाग होते हैं। पहली पर ताली और चौथी पर खाली है। इसमें सुगम संगीत गाये जाते हैं।

मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल	धी	धी	ना	धा	ति	ना
ताल	x			0		

1. प्रश्न : तीन ताल का परिचय देते हुए मात्रा, बोल एवं ताल के साथ लिखें।
2. प्रश्न : तीन ताल और एकताल में क्या अंतर है ?
3. प्रश्न : मात्रा, बोल एवं ताल सहित दादरा ताल लिखें।

◆◆◆